B.A. I (Hon's)

प्रश्न :- बौद्ध दर्शन के योगाचार विज्ञानवाद की व्याख्या करें।

Ans :- बौद्ध दर्शन भारत का एक प्राचीन दर्शन है। योगाचार विज्ञानवाद बौद्ध दर्शन के महायान दार्शनिक सम्प्रदाय का प्रमुख अंग है। योगाचार दर्शन के प्रवर्तक असंग माने जाते हैं तथा वसुबन्धु का नाम भी इस मत से जुड़ा हुआ है। लंकावतार सूत्र इसका प्रमुख ग्रंथ है। वसुबंधु की विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि: तथा 'त्रिस्वभाव' निर्देश इस दर्शन के परिपोषक हैं।

बौद्ध दर्शन के मुख्य रूप से चार सम्प्रदाय माने जाते हैं - योगाचार, माध्यमिक, वैभाषिक, सौत्रान्तिक। इन चारों सम्प्रदायों का विभाजन दो महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर को लेकर है। पहला प्रश्न तत्वशास्त्रीय है और दूसरा ज्ञानशास्त्रीय। योगाचार सम्प्रदाय तत्वशास्त्रीय सम्प्रदाय का विवेचन करता है और यही प्रश्न है कि वास्तविकता क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए योगाचार सम्प्रदाय स्वीकार करता है कि चेतना या विज्ञान ही एक मात्र वास्तविक है और इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी पदार्थ को वास्तविक नहीं माना जा सकता है। विज्ञान को ही एक मात्र वास्तविक मानने के कारण इस सम्प्रदाय के द्वारा स्थापित तत्वशास्त्रीय विचार विज्ञानवाद कहलाता है। इसे योगाचार इसलिए कहा जाता है कि यहाँ निर्वाण की प्राप्ति के लिए योग की महत्ता को स्वीकार किया गया है। दूसरे शब्दों में आलय विज्ञान के अस्तित्व का प्रतिपादन तथा बाह्य जगत की काल्पनिकता को समझने के लिए योगाभ्यास किया जाता है। साथ ही इस मत को आत्मनिष्ठ विज्ञानवाद भी कहा जाता है, क्योंकि यह मत वस्तुओं की सत्ता तथा ज्ञान में अन्तर नहीं मानता है। 'लंकावतार सूत्र' में कहा भी गया है कि -

चित्तं वर्तते चित्तं चित्तमेव विमुच्यते।
चित्तं हि जायते नान्यच्चित्तमेव निरुध्यते॥

अर्थात् केवल विज्ञान या चित्त की ही है। चित्त की ही प्रवृत्ति होती है तथा चित्त की ही निवृत्ति होती है। चित्त के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की न उत्पत्ति होती है और न नाश ही। विज्ञान के अतिरिक्त सभी धर्म असत् है। बुद्ध ने केवल विज्ञान का ही उपदेश दिया है (1) काम, (2) रूप तथा (3) अरूप तीनों लोक विकल्प का परिणाम है। किसी भी बाह्य वस्तु का अस्तित्व नहीं है। जो कुछ है वह विज्ञान है। विज्ञान दो प्रकार का होता है (1) आलय विज्ञान तथा (2) प्रवृत्ति विज्ञान। यद्यपि आलय विज्ञान का सदा लंकावतार सूत्र इसे ध्रुव, अमृत तथा कभी-कभी परिवर्तित न होनेवाला चैतन्य कहा है। यह विषय और विषयी के क्षेत्र से परे है। वह उत्पत्ति और विनाश से परे है। वह विकल्प प्रपंच चित्त है। वह जगत् की प्रवृत्ति का आश्रय और विलय दोनों है। अतः सृष्टि इस प्रपंच की अनादि वासना के कारण है जो अविद्या से प्रेरित है।

(2) प्रवृत्ति विज्ञान आलय की ही अभिव्यक्ति है। यह न तो आलय ही है और न उससे भिन्न ही है। जिस प्रकार मिट्टी न तो पृथ्वी का परमाणु ही है और न उससे भिन्न। सोने का आभूषण न तो सोना ही है और न उससे अलग। उसी प्रकार आलय विज्ञान तथा प्रवृत्ति विज्ञान का संबंध न तो Identity का है और न Difference का। आलय समुद्र के समान है तथा उसकी लहरों की तरह प्रवृत्ति विज्ञान है। जिस प्रकार समुद्र में वायु प्रेरित लहरें सदा उठती रहती है, उसी प्रकार आलय विज्ञान में भी बाह्य विषयों के झोंकों (Ignorance) से विचित्र तरंगे उठते रहती है। इसीलिए आलय विज्ञान को 'तथागत गर्भ' कहा जाता है, क्योंकि समस्त धर्म इसमें निहित है। वास्तव में आलय वर्णनातीत है तथा बुद्धि की पहुँच के बाहर है।

Scanned with CamScanner

असंग का विचार था कि बुद्धियाँ तर्क से हमें सत्ता की यथार्थ जानकारी नहीं मिल सकती क्योंकि उसकी सीमा प्रतिआबद्ध तथा सापेक्ष सत्य तक ही होती है। परिवर्तन विश्व का नियम है और प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। क्योंकि सापेक्ष वस्तु क्षणिक तथा परिवर्तनशील है, इसलिए विचार से अलग बाह्य पदार्थों को Reality नहीं कहा जा सकता। दीपक के लौ के समान सभी वस्तुएँ, जीवात्मा सहित अयथार्थ है। लेकिन Reality तो Pure consciousness है जो स्वयं प्रकाशवान, अद्वैत तथा अनुपम है। जिस प्रकार अच्छी तथा उपयुक्त दवा से विष का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार Suprem Reality बुद्धि तथा क्षणिकता की सभी कुप्रवृत्तियों का दमन कर देती है। जब 'बोधि-सत्व' को Pure consciousness या Universal Self की साक्षात् अनुभूति हो जाती है तो वह ब्रह्म को प्राप्त करता है। वह जन कल्याण में उसी प्रकार लग जाता है जिस प्रकार पक्षी के डैने विकसित होने से वह आकाश में विचरण करने लगते हैं। अतः Pure consciousness के अलावा कुछ भी यथार्थ नहीं माना जा सकता।

योगाचार सम्प्रदाय स्वीकार करता है कि विज्ञान या चेतना से बाहर जिन पदार्थों के अस्तित्व का हमें अनुभव होता है, वे वस्तुतः मन के विकल्प हैं। जिस प्रकार स्वप्न भ्रम की अवस्था में हमें मन से बाहर पदार्थों के अस्तित्व का अनुभव होता है, उसी प्रकार चेतना से बाहर किसी भी पदार्थ का अस्तित्व वास्तविक नहीं है। यही कारण है कि 'धर्मकीर्ति' ने स्वीकार किया है, कि "Blue colour and the consciousness of Blue colour are identical because they are never perceived to exist separately." दृष्टिविकार के कारण कोई व्यक्ति चन्द्रमा दो देख सकता है, किन्तु इसका अर्थ या नहीं

कि चन्द्रमा दो है। अतः क्षणिकत्व, प्रत्यक्ष, आदि से बाह्य पदार्थ की सत्ता असिद्ध है।

वसुबन्धु की मान्यता है कि Pure-consciousness को एकमात्र सत्यता का ज्ञान तब तक संभव नहीं जब तक अज्ञान के अंधकार में हम डूबे रहते हैं। ऐसी स्थिति में संसार तथा बाह्य पदार्थ को मिथ्या माना भी नहीं जाएगा। लेकिन जब उसकी आध्यात्मिकता की अनुभूति हो जाएगी तब बुद्धि के विषय - विषयी की द्वैत समाप्त हो जाएगी एवं बाह्य पदार्थ की अयथार्थता भी सिद्ध हो जाएगी। 'बोधिसत्व' की यह अवस्था वर्णातीत है, क्योंकि उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती।

वसुबन्धु ने अपनी पुस्तक 'विज्ञप्ति मात्रता सिद्धि: - विंशतिका' के अन्तर्गत यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि विज्ञान ही एकमात्र वास्तविकता है। जो लोग बाह्य पदार्थों को वास्तविक मानते हैं, वे ये तर्क देते हैं कि बाह्य पदार्थों में देश नियम, काल नियम इत्यादि पाया जाता है। लेकिन वसुबंधु का कहना है कि स्वप्न तथा विभ्रम की अवस्था में भी ये नियम वर्तमान रहते हैं। फिर भी उन्हें वास्तविक नहीं कहा जा सकता है। अतः विज्ञान या चेतना को छोड़कर अन्य कुछ भी वास्तविक नहीं है।

विज्ञानवादियों ने माध्यमिक शून्यवाद के दार्शनिक विचारों में Pure-consciousness को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। शून्यवाद के परमार्थ सत्य को विज्ञानवादी परिनिष्पन्न मानते हैं तथा संवृति सत्य को परतंत्र तथा परिकल्पित दो भागों में बाँटते हैं। परिनिष्पन्न निरपेक्षतः यथार्थ है, जिसमें विषयी - विषय का बौद्धिक द्वैत नहीं रहता। इसे आलयविज्ञान, आर्यज्ञान, सम्यक तथा प्रज्ञा आदि विभिन्न शब्दों से संबोधित किया जाता है। असंग तथा वसुबंधु जैसे प्रमुख विज्ञानवादियों ने परतंत्र को सापेक्ष तथा बौद्धिक

Scanned with CamScanner

विषयी द्वैत पर आधारित माना है। यह भ्रम तथा आभास है। परिकल्पित केवल नाम है जो खरगोश की सींग या बाँझ औरत के पुत्र के समान अयथार्थ है। इन तीन प्रकार की सत्ताओं में परिनिष्पन्न ही शुद्ध चित्त एवं यथार्थ सत्य है एवं परतंत्र तथा परिकल्पित का आधार है।

पुनः शून्यवादियों की भाँति विज्ञानवादी विचारक मानते हैं कि शून्यता वर्णनातीत है न कि आकाश कुसुम की तरह अयथार्थ है। अध्यास का ही निषेध हो सकता है और जिनका निषेध होता है वे अयथार्थ होते हैं। लेकिन जो सभी अध्यासों का आधार है वह तो यथार्थतः सत्य है। Pure consciousness तो सभी अध्यासों का आधार है और उसके खण्डन के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। इसे विज्ञानवादियों ने 'अमूर्त परिकल्पना' की संज्ञा दी है। जो प्रातिभासिक तथा पारमार्थिक दोनों सत्यता का केन्द्र बिन्दु है।

Ans :- लेकिन आलोचकों ने योगाचार विज्ञानवाद के विरुद्ध निम्न आलोचनाएँ प्रस्तुत की है :-

(i) आलोचकों की आपत्ति है कि यदि Pure consciousness ही एक मात्र सत्ता है तो अन्य विषयों की प्रतीति क्यों होती है? क्या अज्ञान शुद्ध चित्त का अभिन्न अंग है? शुद्ध विज्ञान क्यों और किसलिए अपनी अभिव्यक्ति दूसरे रूपों में करता है? जब विज्ञान स्वयं अपरिवर्तनशील तत्व है तो परिवर्तनशील वस्तुओं का आधार उसे मानना तर्कसंगत नहीं है। out of nothing comes. इन सभी प्रश्नों का समीचीन उत्तर विज्ञानवादियों के पास नहीं है।

(ii) कुछ लोगों ने विज्ञानवाद के विरुद्ध यह आक्षेप उठाया है कि विज्ञानवाद आत्मनिष्ठतावाद (Subjectivism) है। क्योंकि यहाँ विज्ञान को छोड़कर बाह्य पदार्थ को वास्तविक नहीं माना

जाता है। लेकिन वस्तुतः यह आक्षेप उपयुक्त नहीं है, क्योंकि विज्ञानवाद सिर्फ यह स्वीकार करता है कि बाह्य पदार्थ परिवर्तनशील और क्षणिक है। इसके आधार के रूप में शाश्वत विज्ञान का अस्तित्व है। अतः विज्ञानवाद आत्मनिष्ठतावाद नहीं है।

(iii) योगाचार विज्ञानवाद के विरुद्ध शंकर का आक्षेप है कि बाह्य जगत का हमें प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, इसलिए इसकी सत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। प्रत्यक्ष बाह्य जगत को अस्वीकार करना वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति जीभ पर अन्न रखकर उसके स्वाद को अस्वीकार करे। पुनः यदि बाह्य जगत के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं तो यह कहना, कि मन के प्रत्यय बाहरी पदार्थों की तरह दीखते हैं, निरर्थक हो जाता है।

Conclusion :-

उपर्युक्त आलोचनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शंकराचार्य की तरह योगाचार दार्शनिकों ने परमार्थ तत्व को Pure Consciousness ही माना है। जगत अविद्या के कारण सत्य प्रतीत होता है। लेकिन तत्वतः विज्ञान ही एकमात्र सत्य है और यह समस्त वस्तुओं का आधार है तथा इसके आधार पर सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

Scanned with CamScanner